E-ISSN No : 2456-5040 | Volume : 11 | Issue : 4 | April 2026

संगीतोपनिषद् सारोद्धार में वर्णित संगीत सिद्धांतों की वर्तमान समय में उपयोगिता

Dr. Umesh Kumar

ABSTRACT

भारतीय संगीत परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन सांगीतिक परंपराओं में से एक है। इस परंपरा को व्यवस्थित रूप देने में विविध शास्त्र ग्रंथों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मध्यकालीन संगीत ग्रंथों में संगीतोपनिषद् सारोद्धार का विशिष्ट स्थान है। इस ग्रंथ की रचना लगभग 1340 ईस्वी में पंडित सुधाकलश जी द्वारा की गई, इसमें संगीत के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक दोनों पक्षों का क्रमबद्ध वर्णन प्राप्त है। ग्रंथ के छह अध्यायकृगीत प्रकाशन, ताल प्रकाशन, राग प्रकाशन, वाद्य प्रकाशन, नृत्य प्रकाशन तथा नृत्य पद्धति प्रकाशनकृभारतीय संगीत के विभिन्न आयामों को स्पष्ट करते हैं। वर्तमान समय में भारतीय शास्त्रीय संगीत का अध्ययन केवल परंपरा तक सीमित नहीं है, बल्कि विश्वविद्यालयों, संगीत संस्थानों तथा शोध कार्यों में भी इन ग्रंथों का अध्ययन आवश्यक माना जाता है। प्रस्तुत शोध–पत्र में संगीतोपनिषद् सारोद्धार में वर्णित संगीत सिद्धांतों का अध्ययन करते हुए उनकी वर्तमान समय में उपयोगिता का विश्लेषण किया गया है।

KEYWORDS: संगीतोपनिषद् सारोद्धार, सुधाकलश, भारतीय संगीत, राग, ताल, वाद्य, नृत्य

Assistant Professor
(Guest Faculty)
Department of Music
Panjab University
Chandigarh

How to Cite:
Dr. Umesh Kumar (2026), संगीतोपनिषद् सारोद्धार में वर्णित संगीत सिद्धांतों की वर्तमान समय में उपयोगिता, International Educational Applied Scientific & Research Journal (IEASRJ), Vol: 11, Issue: 4, 66-67

भूमिका – भारतीय संगीत का इतिहास अत्यंत प्राचीन एवं समृद्ध है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक संगीत निरंतर प्रवाहमान है एवं विकसित होता आ रहा है। विकासक्रम की इस यात्रा में अनेकों संगीताचार्यों ने ऐसे ग्रंथों की रचना की, जिन्होंने संगीत के सिद्धांतों को सुरक्षित रखा। आचार्य भरतमुनि का नाट्यशास्त्र, मतंग मुनि जी का बृहद्देशी तथा पंडित शारंगदेव जी का संगीतरत्नाकर भारतीय संगीत के प्रमुख ग्रंथ हैं। संगीतोपनिषद् सारोद्धार ग्रंथ भारतीय संगीत के इतिहास में विशेष महत्व रखता है क्योंकि इसमें संगीत के विभिन्न पक्षों का सरल, व्यवस्थित तथा व्यावहारिक वर्णन मिलता है। आज भी भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षा, मंचीय प्रस्तुति तथा अनुसंधान में इस ग्रंथ में वर्णित सिद्धांतों की उपयोगिता बनी हुई है। इसलिए इस ग्रंथ का अध्ययन केवल ऐतिहासिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि आधुनिक संगीत की समझ विकसित करने के लिए भी आवश्यक है। इसमें संगीत के विभिन्न पक्षों को छह अध्यायों में विभाजित किया गया है, जिन्हें प्रकाशन कहा गया है।

प्रथम अध्याय – गीत प्रकाशन में गुरु वंदना, नाद की उत्पत्ति, गीत के प्रकार, प्रबंध, रूपक तथा संगीत के सौंदर्य पक्ष का वर्णन किया गया है।

द्वितीय अध्याय – ताल प्रकाशन में ताल की परिभाषा, लघु, गुरु, प्लुत, मात्राएँ तथा विभिन्न तालों का विस्तृत वर्णन मिलता है।

तृतीय अध्याय – राग प्रकाशन में नाद, स्वर, श्रुति, ग्राम, मूर्छना, तान तथा रागों का विस्तार से वर्णन किया गया है। इसमें अनेक रागों एवं उनकी रागिनियों का भी उल्लेख मिलता है।

चतुर्थ अध्याय – वाद्य प्रकाशन में तत, सुषिर, अवनद्ध तथा घन वाद्यों का वर्गीकरण एवं उनके स्वरूप का वर्णन किया गया है।

पंचम अध्याय – नृत्य प्रकाशन में नृत्य, ताण्डव, लास्य तथा विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक अवसरों पर नृत्य की उपयोगिता का वर्णन मिलता है।

षष्ठ अध्याय – नृत्य पद्धति प्रकाशन में संगीत एवं नृत्य की विभिन्न पद्धतियों तथा उनके व्यावहारिक स्वरूप का वर्णन किया गया है।

संगीतोपनिषद् सारोद्धार में वर्णित संगीत सिद्धांतों की वर्तमान समय में उपयोगिता

1. नाद सिद्धांत की उपयोगिता – ग्रंथकार ने नाद को संगीत का मूल आधार माना है। नाद के बिना संगीत की कल्पना संभव नहीं है। वर्तमान समय में भी संगीत शिक्षा का प्रारंभ स्वर और नाद की शुद्धता से होता है। गायन, वादन तथा ध्वनि प्रशिक्षण में अनुनाद, कंपन तथा ध्वनि की गुणवत्ता पर विशेष बल दिया जाता है। आधुनिक ध्वनि विज्ञान भी नाद के महत्व को स्वीकार करता है।

2. गीत सिद्धांत की उपयोगिता

गीत प्रकाशन में गीत के विभिन्न प्रकारों, प्रबंधों तथा रूपकों का वर्णन मिलता है। वर्तमान समय में ध्रुपद, ध

Research Paper

Copyright© 2026, IEASRJ. This open-access article is published under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License which permits Share (copy and redistribute the material in any medium or format) and Adapt (remix, transform, and build upon the material) under the Attribution-NonCommercial terms.

ामार, ख्याल, ठुमरी तथा भजन जैसी गायन शैलियाँ भले ही विकसित हो चुकी हों, लेकिन उनकी आधारभूत संरचना प्राचीन गीत परंपरा से ही संबंधित है। संगीत शिक्षा में विद्यार्थियों को गीत की रचना, भाव तथा प्रस्तुति का प्रशिक्षण दिया जाता है, जो इन सिद्धांतों पर आध ाारित है।

3. ताल सिद्धांत की उपयोगिता

ताल प्रकाशन में ताल को संगीत का आधार माना गया है। लघु, गुरु, प्लुत तथा मात्राओं का जो विवरण ग्रंथ में मिलता है, वह आज भी भारतीय संगीत की लय व्यवस्था को समझने में सहायक है। वर्तमान समय में तबला, पखावज तथा अन्य ताल वाद्यों की शिक्षा में ताल सिद्धांत का विशेष महत्व है। बिना ताल के कोई भी गायन, वादन या नृत्य प्रभावशाली नहीं हो सकता।

4. राग सिद्धांत की उपयोगिता

राग प्रकाशन में स्वर, श्रुति, ग्राम, मूर्छना तथा रागों का विस्तृत वर्णन मिलता है। वर्तमान समय में भी किसी राग का अध्ययन उसके स्वरूप, स्वर–संगठन, वादी–संवादी तथा चलन के आधार पर किया जाता है। यह सिद्धांत आज भी भारतीय शास्त्रीय संगीत का आधार हैं। विश्वविद्यालयों तथा संगीत संस्थानों में राग शिक्षा इन्हीं मूल अवधारण ाओं पर आधारित है।

5. वाद्य सिद्धांत की उपयोगिता

वाद्य प्रकाशन में वाद्यों का वर्गीकरणकृतत, सुषिर, अवनद्ध तथा घन–किया गया है। यह वर्गीकरण आज भी भारतीय संगीतशास्त्र में मान्य है। सितार, सरोद, वीणा, बांसुरी, तबला, पखावज, मंजीरा आदि वाद्यों को समझने में यह वर्गीकरण अत्यंत उपयोगी है। संगीत के विद्यार्थियों के लिए यह ज्ञान आज भी आवश्यक है।

6. नृत्य सिद्धांत की उपयोगिता

नृत्य प्रकाशन में ताण्डव एवं लास्य नृत्य का उल्लेख करते हुए विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक अवसरों पर नृत्य के महत्व को बताया गया है। वर्तमान समय में कथक, भरतनाट्यम, कुचिपुड़ी, मणिपुरी तथा ओडिसी जैसी शास्त्रीय नृत्य शैलियों में संगीत और ताल का समन्वय इसी परंपरा को आगे बढ़ाता है।

7. नृत्य पद्धति की उपयोगिता

नृत्य पद्धति प्रकाशन में संगीत एवं नृत्य की विभिन्न पद्धतियों का वर्णन मिलता है। वर्तमान समय में मंचीय प्रस्तुति, कोरियोग्राफी तथा नृत्य शिक्षण में इन सिद्धांतों की उपयोगिता स्पष्ट दिखाई देती है। यह अध्याय संगीत और नृत्य के पारस्परिक संबंध को भी स्पष्ट करता है।

8. संगीत शिक्षा में उपयोगिता

आज विश्वविद्यालयों एवं संगीत महाविद्यालयों में भारतीय संगीतशास्त्र का अध्ययन अनिवार्य माना जाता है। संगीतोपनिषद् सारोद्धार विद्यार्थियों को भारतीय संगीत के ऐतिहासिक विकास, सिद्धांतों तथा परंपरा की जानकारी प्रदान करता है। इससे संगीत की मूल अवधारणाओं को समझना सरल हो जाता है।

9. संगीत अनुसंधान में उपयोगिता

वर्तमान समय में संगीत के क्षेत्र में अनेक शोध कार्य किए जा रहे हैं। शोधार्थी प्राचीन एवं मध्यकालीन ग्रंथों के आधार पर संगीत के विकास का अध्ययन करते हैं। संगीतोपनिषद् सारोद्धार इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत है क्योंकि यह प्राचीन और आधुनिक संगीत के बीच एक सेतु का कार्य करता है।

10. सांस्कृतिक संरक्षण में उपयोगिता

भारतीय संगीत केवल कला नहीं, बल्कि सांस्कृतिक विरासत भी है। ऐसे ग्रंथ भारतीय संगीत की मूल परंपरा को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वर्तमान समय में इनके अध्ययन, प्रकाशन तथा डिजिटलीकरण के माध्यम से भारतीय संगीत की अमूल्य धरोहर को संरक्षित किया जा रहा है।

निष्कर्ष

संगीतोपनिषद् सारोद्धार भारतीय संगीत का एक अत्यंत महत्वपूर्ण मध्यकालीन ग्रंथ है। इसमें नाद, गीत, ताल, राग, वाद्य तथा नृत्य से संबंधित सिद्धांतों का व्यवस्थित एवं सरल वर्णन मिलता है। यद्यपि संगीत की प्रस्तुति एवं शिक्षण पद्धति में समय के साथ अनेक परिवर्तन हुए हैं, फिर भी इस ग्रंथ में प्रतिपादित मूल सिद्धांत आज भी समान रूप से उपयोगी हैं। आधुनिक संगीत शिक्षा, अनुसंधान, मंचीय प्रस्तुति तथा सांस्कृतिक संरक्षण के क्षेत्र में इस ग्रंथ का महत्व निरंतर बना हुआ है। इसलिए संगीत के विद्यार्थियों, शिक्षकों और शोधार्थियों के लिए संगीतोपनिषद् सारोद्धार का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। यह ग्रंथ भारतीय संगीत की प्राचीन परंपरा को समझने के साथ–साथ वर्तमान संगीत को भी एक सुदृढ़ सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. माया टाक, संगीत सम्पदा, 2002, पृ. 17–18।
2. डॉ. श्रद्धा मालवीय, भारतीय संगीतज्ञ एवं संगीत ग्रंथ, 2010, पृ. 40।
3. प्रो. लिपिका दास गुप्ता, भारतीय संगीतशास्त्र ग्रंथ परंपराः एक अध्ययन, 2009, पृ. 123–126।
4. डॉ. स्वाति शर्मा, संगीत का इतिहास, 2006, पृ. 254
5. कमलेश शर्मा, मध्यकालीन प्रमुख संगीत ग्रंथों की वर्तमान प्रासंगिकता का अध्ययन (शोध प्रबंध) ईई